**मधुर मधुर मेरे दीपक जल – कक्षा 10**

 दिल चाहता है –  साहस दिखाऊँ I



 या मुझे मिल जाए I

या फिर  मेस्सी जैसा खिलाडी बनकर नाम कमाऊँ –

 सबकी पसंद अलग अलग हैI

 **मधुर मधुर मेरे दीपक जल** कविता में

कवयित्री महादेवी वर्मा क्या चाहती हैं ?

 कवयित्री अपनी आस्था रुपी दीपक को जलाकर विश्व में सदैव ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहती हैं I उनसे मिलने उनके प्रियतम / ईश्वर आ रहे हैं I वे चाहती हैं कि उनके आने का मार्ग, हमेशा के लिए प्रकाशमय हो जाए I

कवयित्री महादेवी वर्मा अज्ञान के अँधेरे को दूर करने के लिए धूप बत्ती बनकर सुगंध मोमबत्ती की तरह जलकर पिघल फैलाना चाहती हैं I जाना चाहती हैं I



दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है I आत्मसमर्पण करता है I विश्व -कल्याण का काम करते समय ख़ुशी से करना चाहिए I इसलिए कवयित्री अपने दीपक से, प्रसन्न होकर जलने की विनती करती है I

 संसार के सारे शीतल नूतन कोमल वस्तुएँ दीपक से चिंगारी मांगते हैं ताकि वे भी प्रकाश ग्रहण कर सके I विश्व रुपी पतंगा पछताकर कहता है कि वह दीपक के साथ मिलकर जला नहीं और दूसरों की भलाई के लिए कुछ किया नहीं I उसका जीवन व्यर्थ हो गया I



कवयित्री इस संसार को शलभ यानी पतंगा कहती है I

पतंगा जल जाता है I जलकर मर जाता है किन्तु उसका जल

जाना या मर जाना बेमतलब का हैं I

एक छोटा सा दीप पूरा अँधेरा मिटा सकता हैI

आकाश में इतने सारे तारे चमकते हैं मगर इनसे किसी को रोशनी नहीं मिलती , क्योंकि उनमें कोई स्नेह (तेल) नहीं है I तारों का जलना निरुद्देश्य है I (अर्थात जीने का कोई लक्ष्य होना चाहिए)

 बादल अपने आपमें बिजली लिए हुए असमान में भटकता रहता है, बादल को देखकर सागर का दिल जलता है I

 कवयित्री कहती है कि परोपकार और त्यागा का चिह्न दीपक हँसता हुआ जलता रहे I

 

 Prepared by Sabiha Parveen